IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

महिलाओ के लिए पर्यावरणीय शिक्षा : सतत विकास की और एक कदम

निर्मला परेवा

महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

naaritumho@gmail.com

सारांश

शिक्षा वो आधार है जो मानव को न केवल सशक्त बनाती है बल्कि उन्हें अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने का माध्यम भी प्रदान करती है |विशेष रूप से महिलाओं के संदर्भ में, शिक्षा ने उन्हें अपनी स्थिति को सुधारने और समाज में अपने योगदान को पहचानने का अवसर प्रदान किया एवं शिक्षा के माध्यम से ही महिलाए अपने आपको सशक्त बनाने का कार्य प्राचीन समय से करती आ रही है| पर्यावरणीय समस्याओ को सुलझाने और उनके निरंतर विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में महिलाओ की भागीदारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण है | इसी कारण से वर्तमान में महिलाओ को पर्यावरण प्रबन्धन में सशक्त बनाना एक महत्वपूर्ण विषय बनता जा रहा है, क्योकि यह न केवल सामाजिक विकास बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए भी अति आवश्यक हो गया है | शिक्षित महिलाये प्राकृतिक संसाधनो को संरक्षण देने में पूर्णतया सक्षम है | 19वी सदी की सावित्रीबाई फूले से लेकर 21वी सदी की चामी मुर्मू हो या फिर के.चेलाम्मल के द्वारा शिक्षा और महिला सशक्तिकरण का समाज में एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है |ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो में महिलाओ को पर्यावणीय नीतियों और कार्यक्रमों का हिस्सा बनाकर पर्यावरण को पूर्णतया सुरक्षित किया जा सकता है|

मुख्य शब्द : पर्यावरण प्रबन्धन, सशक्तिकरण, संरक्षण, स्थायी आजीविका, आत्मनिर्भर,

शोध पत्र का उद्देश्य

- पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना|
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगो में जागरूकता विकसित करना|

अध्ययन क्षेत्र की सामान्य जानकारी

शोध पत्र में भारत के क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न राज्यों में महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए कार्यों का अध्ययन किया गया है। शोध पत्र में राजस्थान राज्य के जोधपुर जिले, उत्तराखंड राज्य के चमोली और अल्मोड़ा जिलों के समकक्ष उदाहरणों को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त , कर्नाटक, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के रायपुर और बस्तर जिलों में महिलाओं द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों का भी विश्लेषण किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन पर विशेष जोर दिया गया है। द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए महिलाओं द्वारा किए गए आंदोलनों, गतिविधियों और कार्यों का अध्ययन किया गया है। आंकड़ो के संग्रह के लिए महिलाओं की डायरियों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, और पुस्तकों का उपयोग किया गया है।साथ ही, महिला पर्यावरणविदो की आत्मकथाओं का गहन अध्ययन कर पर्यावरण संरक्षण में उनकी भूमिका से जुड़े विभिन्न तथ्य और आंकड़े एकत्र किए गए हैं। इन स्रोतों के आधार पर किए गए अध्ययन को व्यावहारिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। यह प्रविधि शोध को वैज्ञानिक वैधता प्रदान करने के साथ-साथ इसे यथार्थ बनाने में भी सहायक है।

परिचय

महिलाओं को पर्यावरण संरक्षण, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण, और हरित प्रौद्योगिकियों के उपयोग जैसे विषयों पर शिक्षा प्रदान करने से वे अपने परिवार और समाज में जागरूकता फैलाने में सक्षम बनती हैं। महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से सततता और पर्यावरण प्रबंधन में सशक्त बनाना, समाज के विकास और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को गति प्रदान कर सकता है।इस दृष्टिकोण से, महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम और प्रशिक्षण आयोजित करना, न केवल उनकी व्यक्तिगत प्रगति को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि उनके माध्यम से समाज और पर्यावरण को भी भविष्य में लाभ होगा।इस शोध पत्र में हम इस विषय पर विस्तार से वर्णन करेंगे कि पर्यावरण शिक्षा कैसे महिलाओं को इस दिशा में सशक्त बना सकती है और इसके क्या-क्या लाभ हो सकते हैं।

महिलाओं का पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में योगदान:

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि वे अपने घर, समुदाय और समाज में कई भूमिकाएँ निभाती हैं। वे बच्चों की पहली शिक्षक होती हैं और उनके व्यवहार में पर्यावरण सम्बन्धी मूल्यों का संचार करती हैं। कृषि, जल प्रबंधन, कचरा प्रबंधन, और ऊर्जा उपयोग जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करके नए और प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं।कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के सतत विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक है। ग्रामीण परिवेश की महिलाएं न केवल कृषि कार्यों में अपितु जल, भूमि, और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में भी अहम भूमिका निभाती हैं।

सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं के प्रयासों को पहचानना और उन्हें सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है।महिलाएं अपने पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से बीजों के संरक्षण ,फसल, पशुपालन, घरेलू उपयोग के लिए खाद्य सामग्री तैयार करने से लेकर जैविक खाद, कृषि अपशिष्टों और जैविक खाद का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में सहयोग करती हैं। जो सतत कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में महिलाएं पानी के उपयोग, संरक्षण, और प्रबंधन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होती हैं। महिलाएं घरेलू उपयोग के लिए कुओं, तालाबों, और झरनों से पानी लाने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। वे इन स्रोतों की स्वच्छता बनाए रखने का भी ध्यान रखती है।महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान, अनुभव, और सक्रिय भागीदारी से जल संसाधनों के संरक्षण और सतत उपयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है। दूसरी ओर वनों के संरक्षण और वृक्षारोपण में योगदान देती हैं, जिससे जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बना रहता है | महिलाएं वृक्षारोपण और हरित क्षेत्र बढ़ाकर वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण में सहायता करती हैं।महिलाएं पारंपरिक ज्ञान के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करती हैं, जिससे संसाधनों की बर्बादी कम होती है।उनके द्वारा किये गए ये कार्य उनके परिवारिक एवं प्राकृतिक प्रबन्धन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण होते है और सतत विकास में महिला के योगदान को भी दर्शाते है |

महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका:

महिलाओं को सततता और पर्यावरण प्रबंधन में सशक्त बनाने के लिए शिक्षा एक प्रभावी साधन है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में नई जानकारी के साथ आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है।पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, और पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझ सकती हैं। यह शिक्षा उन्हें अपने समुदाय और परिवार के लिए स्थायी समाधान तैयार करने में सक्षम बनाती है तथा डिजिटल और तकनीकी शिक्षा महिलाओं को पर्यावरण प्रबंधन के नए तरीकों को अपनाने में सहायक होती है। जैसे कि सौर ऊर्जा, जल शोधन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

प्रौद्योगिकी, और कचरा पुनर्चक्रण के तकनीकी उपाय। पर्यावरणीय शिक्षा महिलाओं में नेतृत्व कौशल का विकास करती है, जिससे वे सामुदायिक परियोजनाओं का नेतृत्व कर सकती हैं। जैसे कि वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, और स्थानीय संसाधन संरक्षण की पहल।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा के उपाय:

महिलाओं के सशक्तिकरण का पहला कदम प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा प्रदान करना है। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में सभी लड़कियों की स्कूल तक पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए। इसके लिए सरकार को "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसी योजनाओं को और प्रभावी बनाना होगा।इस योजना का प्रारम्भ महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 22 जनवरी **2015** को पानीपत ,हरियाणा से किया गया |योजना का उद्देश्य बालिका लिंगानुपात को बढ़ाना एवं शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं को सामाजिक और वितीय रूप से स्वतंत्र बनाना है |योजना के क्रियान्वयन होने के परिणाम स्वरूप समाज में कन्या शिशु के प्रति लोगो के दृष्टिकोण में परिवर्तन के साथ बालिकाओ की शिक्षा ,स्वास्थ्यके प्रति कार्य को बल मिला |प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात में हरियाणा के बीबीपुर के एक सरपंच की तारीफ की जिसने **Selfie with Daughter"** पहल की शुरआत की | सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए वर्तमान में ऐसी योजनाओ का निरंतर क्रियान्वयन ही महिलाओ एवं बालिकाओ को आत्मनिर्भरता की और अग्रसर करता है| महिलाओं के समग्र विकास के लिए शिक्षा के साथ उनके स्वास्थ्य और पोषण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के बिना शिक्षा का पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा सकता। सततता और पर्यावरण प्रबंधन पर विशेष पाठ्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं, जो महिलाओं को पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के लिए प्रशिक्षित होने में सहायक होगे।ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं को उनके समुदाय के स्तर पर शिक्षा प्रदान करना, सततता में उनकी भागीदारी बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है।सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए जो महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए अधिक संसाधन प्रदान करें सके।

सतत विकास में महिलाओं के योगदान के उदाहरण

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

भारत में पर्यावरण और महिलाओं के बीच गहरा संबंध है, जिसमें विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से आम नागरिकों को जागरूक करने का प्रयास शामिल है। महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाए गए प्रमुख आंदोलनों का विवरण क्रमश है :

खेजड़ी आंदोलन (1730)

खेजड़ी आंदोलन, **1730** में राजस्थान के जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में बिश्नोई समाज द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किया गया ऐतिहासिक आन्दोलन है जिसमें **363** लोगों ने खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इस आंदोलन में **अमृता देवी बिश्नोई** के नेतृत्व में महिलाओं ने साहस और दृढ़ता का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया।आन्दोलन पर्यावरण के प्रति अविस्मरणीय प्रेम को दर्शाता है|खेजडली आन्दोलन महिला नेतृत्व वाले चिपको आन्दोलन एवं नर्मदा बचाओ आन्दोलन को प्रेरणा देता है | ऐसे आन्दोलन महिलाओ की द्रढ़शक्ति ,बलिदान और सामूहिक प्रयास वर्तमान में पर्यावरणीय न्याय और समानता के लिए आवश्यक है |

चिपको आंदोलन (1973-74)

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महिलाओं की निर्णायक भूमिका का प्रतीक है। यह आंदोलन उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) के चमोली जिले में शुरू हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य वनों की कटाई को रोकना था।गौरा देवी ने रैणी गांव में महिलाओं का नेतृत्व किया और जब ठेकेदारों ने पेड़ों की कटाई करने का प्रयास किया, तो महिलाओं ने एकजुट होकर जंगल में जाकर उनका विरोध किया। उन्होंने "पेड़ों से लिपटना" (चिपको) जैसे अहिंसक तरीकों का उपयोग किया, जो गांधीवादी मूल्यों को अपनाने का एक उदाहरण था।महिलाओं ने पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया और जंगल को अपनी आजीविका और संस्कृति का आधार मानकर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रेरित किया।वर्तमान में चिपको आंदोलन सतत विकास और जैव विविधता की रक्षा के लिए आवश्यक संदेश देता है। इसने नर्मदा बचाओ आंदोलन और अप्पिको आंदोलन जैसे अन्य पर्यावरणीय आंदोलनों को प्रेरित किया। यह आंदोलन प्रकृति के प्रति गहरी निष्ठा और दृढ संकल्प से बड़े पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करता है।महिलाओं की यह पहल आज के समय में जलवायु संकट और संसाधनों की रक्षा के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। इसके प्रभाव को देखते हुए, चिपको आंदोलन को **1987** में राइट लाइवलीहुड पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।इस प्रकार, चिपको आंदोलन ने न केवल पर्यावरण संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया, बल्कि महिलाओं की सामाजिक भूमिका को भी उजागर किया, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

खनन विरोधी आंदोलन(1980)

खनन विरोधी आंदोलनों में महिलाओं ने अपने साहस और दृढ़ता से पर्यावरणीय नीतियों, आदिवासी अधिकारों और स्थानीय समुदायों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष किया है। इस आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य अनियंत्रित खनन गतिविधियों से पर्यावरणीय क्षति, जलवायु परिवर्तन और आदिवासी इलाकों में जीवन-स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों को रोकना था | महिलाओं ने अपने समुदायों और परिवारों के लिए खनन से उत्पन्न खतरों के खिलाफ संघर्ष किया, जिसमें महिलाओं का अधिकार और सुरक्षा प्राथमिक **था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में** खनन के अनियंत्रित विस्तार के कारण बढ़ते प्रदूषण और पर्यावरणीय संकट को ध्यान में रखते हुए यह आंदोलन महिलाओं को पर्यावरण की रक्षा में अग्रणी बनाता है। एवं आदिवासी अधिकारों को प्राथमिकता ,उनके पारंपरिक भूमि अधिकारों की रक्षा करता है।आंदोलनों के माध्यम से महिलाओं ने अपनी आवाज और नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित किया, जो सामाजिक और आर्थिक न्याय की ओर एक कदम बढ़ाता है । यह वर्तमान समय में संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, स्थायी विकास और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में प्रासंगिक बना हुआ है।

अप्पिको आंदोलन (1982)

अप्पिको आंदोलन 1982 में कर्नाटका राज्य के सुल्लिया और आसपास के क्षेत्रों में शुरू हुआ । यह आंदोलन **चिपको आंदोलन** से प्रेरित था और इसका उद्देश्य जंगलों की अन्धाधुंध कटाई को रोकना था। अप्पिको शब्द कर्नाटका की **तुलु** भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है "गले लगाना", और इसका संकेत है कि जैसे चिपको आंदोलन में महिलाएं पेड़ों से लिपटकर उनकी रक्षा करती थीं, वैसे ही अप्पिको आंदोलन में भी महिलाएं पर्यावरण की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही थीं। महिलाओं ने स्थानीय समुदायों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने , जंगलों के महत्व एवं उनके संरक्षण की आवश्यकता को समझकर , आंदोलन के दौरान सरकारी और अन्य औद्योगिक प्रयासों का विरोध किया, जो जंगलों की कटाई कर रहे थे। उन्होंने अहिंसक तरीके से विरोध प्रदर्शन करके , पेड़ों से लिपटकर उनकी रक्षा की और पर्यावरणीय न्याय के लिए आवाज उठाई।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अप्पिको आंदोलन ने जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा का संदेश दिया, जो आज के समय में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है।यह आंदोलन समाज को पर्यावरणीय संवेदनशीलता और प्राकृतिक संसाधनों के न्यायपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूक तो करता ही है,साथ ही पर्यावरणीय जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, और सतत विकास के महत्व को स्पष्ट करता है। वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का संकट गंभीर है, अप्पिको आंदोलन की शिक्षाएं और महिलाओ का योगदान आज भी प्रेरणा स्रोत हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

भोपाल गैस त्रासदी **आंदोलन (1984)**

भोपाल गैस त्रासदी, जो **2-3** दिसंबर **1984** को हुई, भारत के सबसे भीषण औद्योगिक हादसों में से एक है। इस त्रासदी ने न केवल हजारों लोगों की जान ली, बल्कि इसके बाद महिलाओं के आंदोलनों को भी जन्म दिया। **मुख्य संगठन के रूप में भोपाल गैस पीड़ित महिला स्टेशनरी कर्मचारी संघ** संगठन ने महिलाओं को संगठित करने और उनकी आवाज़ को उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। **रशीदा बी** इस संघ की अध्यक्ष रही उन्होंने गैस पीड़ितों के बीच लंबे समय तक काम किया। **गैस पीड़ित निराश्रित पेंशनभोगी संघर्ष मोर्चा** इस संगठन ने भी महिलाओं को एकजुट करने में मदद की और न्याय की मांग की। भोपाल गैस त्रासदी के बाद महिलाओं का आंदोलन न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालने में सफल रहा। इसने महिलाओं को सशक्त बनाने, सामाजिक न्याय की मांग करने और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाने का एक मंच निर्मित किया।महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया, जिससे सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। यह आंदोलन महिलाओं के अधिकारों के लिए अन्य आंदोलनों का आधार बना, जैसे कि **1990** के दशक का महिला सशक्तिकरण आंदोलन।

नर्मदा बचाओ आंदोलन

1985 में मेधा पाटकर के नेतृत्व में शुरू हुआ, नर्मदा घाटी की जैव विविधता और आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए एक महत्वपूर्ण जन आंदोलन बन गया। आंदोलन का उद्देश्य उन लोगों के लिए उचित पुनर्वास की मांग कर रहा था, जो सरदार सरोवर बांध जैसे बड़े बांधों के निर्माण के कारण विस्थापित हो रहे थे।एवं आंदोलन ने नर्मदा नदी और उसकी जैव विविधता को बचाने के लिए एकजुटता दिखाई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि विकास परियोजनाएं पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं। मेधा पाटकर ने आंदोलन को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भूख हड़तालें और अन्य शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित किए। प्रसिद्ध लेखिका अरुंधति रॉय भी इस आंदोलन से जुड़ीं, जिससे इसे और अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।

पर्यावरण संरक्षण के अन्य प्रयासो में :-

1. बस्तर में पर्यावरण संरक्षण (छत्तीसगढ़):

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

- स्व-सहायता समूहों और महिला समितियों ने प्लास्टिक मुक्त वातावरण के लिए कागज के थैले बनाने का कार्य किया।

2. रायपुर में पर्यावरण जागरूकता अभियान:
   - हर साल राज्योत्सव में छात्र-छात्राओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने वाले स्टॉल लगाए जाते हैं। 2022 में सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध के बारे में जागरूकता फैलाई गई।
3. आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम:
   - रायपुर जिले में आर्द्रभूमि संरक्षण के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें सफाई अभियान के दौरान 285 किलोग्राम कचरा एकत्रित किया गया।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों की जागरूकता

भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए महिलाओं की भूमिका और पर्यावरणीय आंदोलनों का महत्व अत्यधिक है। यह अध्ययन इस दिशा में निम्नलिखित पहलुओं को उजागर करता है:

- लोगों को समझाना आवश्यक है कि वायु, जल, मिट्टी और जैव बीविविधता जैसे पर्यावरणीय घटक मानव गतिविधियों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- समाज में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति चेतना उत्पन्न करना और पर्यावरण के महत्व को समझाना अनिवार्य है।
- उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करने के साथ-साथ बिजली, पानी और गैस का विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण में महिलाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों को समाज के सामने प्रस्तुत कर यह दिखाया जा सकता है कि उनकी सक्रियता किस प्रकार परिवर्तन ला सकती है।
- अमृता देवी द्वारा पर्यावरण संरक्षण में किए गए बलिदानों को युवाओं के सामने प्रस्तुत करना और उन्हें जिम्मेदारी का एहसास कराना आवश्यक है।
- भारत में महिलाओं द्वारा संचालित पर्यावरणीय आंदोलनों की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करना चाहिए ताकि वर्तमान समाज उन्हें प्रेरणा के रूप में देख सके।
- वंगारी मथाई द्वारा चलाए गए "ग्रीन बेल्ट आंदोलन" का उदाहरण देकर 21वीं सदी में विश्व को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

- सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं में जनता को अधिक से अधिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जैसे, कचरे का सही निपटान, वृक्षारोपण, जैविक सामग्री का उपयोग, जल संरक्षण, और प्लास्टिक के उपयोग को कम करना।

निष्कर्ष

सततता और पर्यावरण प्रबंधन में महिलाओं की सशक्त भूमिका समाज और पर्यावरण दोनों के लिए लाभकारी है। उनके अनुभव, ज्ञान, और परिश्रम का सही उपयोग करके पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यह न केवल पर्यावरण की सुरक्षा करेगा, बल्कि महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देगा। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इस प्रकार, महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें पर्यावरण प्रबंधन में शामिल करना, एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की दिशा में अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गर्ग, बी.एल. (2003). *पर्यावरण: प्रकृति और मानव*, शब्द साधना, अजमेर, प्रथम संस्करण।
2. ओझा, डी.डी. (1999). *पर्यावरण अवबोध*, पवन कुमार शर्मा, साइन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर।
3. चातक, गोविन्द (1991). *पर्यावरण और संस्कृति का संकट*, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
4. सक्सेना, एच.एम. (1994). *पर्यावरण तथा परिस्थितिकी भूगोल*, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
5. साहू, डॉ. बनवारी लाल (1997). *पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ी बलिदान*, बोधि प्रकाशन, जयपुर।
6. सिंह, राजीव कुमार (2009). *पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास*, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
7. यादव, वीरेन्द्र सिंह (2010). *21वीं सदी का पर्यावरण आन्दोलन: चिंतन के विविध आयाम*, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
8. सक्सेना, एच.एम. (2009). *पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास*, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
9. शर्मा, डॉ. मालती (2011). *पर्यावरण अध्ययन*, शिवांक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण।

पत्र-पत्रिकाएं

1. *दैनिक भास्कर*, जयपुर।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 8, June 2025

Impact Factor: 7.67

2. *दैनिक जागरण*, नई दिल्ली।

3. *दी हिन्दू*, कस्तूरबा एंड सन्स लिमिटेड, नई दिल्ली।

4. *कुरुक्षेत्र*, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।

5. *नई दुनिया*, जगदलपुर, छत्तीसगढ़।

6. नवभारत टाइम्स.इण्डिया टाइम्स